KLG-USY/2A/1.00

प्रो. राम गोपाल यादव (क्रमागत) : बाढ़ के दिनों में जब पानी आता है, तो वह पानी सीधे आपके घाट से टकराता है। उसकी वजह से उधर घाट के नीचे दस-दस, बीस-बीस फुट खोखली जगह बन गई है। अब यदि उसमें कोई आदमी चला जाता है, तो वह जिंदा नहीं निकल पाता है। डा. लोहिया कहा करते थे कि नदियों को साफ करो, जो अब मेरी समझ में आया है कि नदियों को साफ करना कितना जरूरी है। अगर कोई जरा सी मिट्टी उठा लेगा, तो खनन हो रहा है। अगर इन नदियों में खनन नहीं होगा, तो ये नदियां सूख जाएंगी। आप देखिएगा, गंगा ऊपर आ गई है, बिल्कुल खेतों के किनारे लेवल पर आ गई है। इधर से जिप्सी को डालिए और उधर से गंगा में निकाल ले जाइए, यह हालत हो गई है। सफाई के नाम पर कुछ भी काम नहीं हो रहा है। अगर केवल उसको खोद ही देते, उसके खनन का पट्टा दे देते कि इतना तुम करो, इतना तुम करो, तो भी गंगा साफ हो जाती और सरकार को बहुत बड़े पैमाने पर रेवेन्यू भी मिल जाता। न जाने कौन योजना बनाने वाले हैं, कौन क्या करने वाले हैं, कुछ समझ में नहीं आता।

महोदय, यह बात मुझे मजबूरन कहनी पड़ रही है कि उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर, अभी एक दिन में 23 एनकाउंटर हुए। एक निर्दोष व्यक्ति तो नोएडा में मारा गया, मगर 23 जगह बताया गया कि एनकाउंटर हुए। नए डीजीपी ने जिस दिन चार्ज लिया, उसके अगले दिन ये एनकाउंटर हुए। ये क्यों हुए? उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री विधान सभा के अंदर और पब्लिक मीटिंग में कहते हैं कि

ठोक देंगे। आप बताइए, पूरा सदन बैठा हुआ है, सभी भले हैं, इस सदन के लोगों के बारे में लोगों की धारणा बहुत अच्छी है, दूसरे सदन में और अन्य सदनों में हो सकता है कि उनमें इधर-उधर के लोग आ जाएं, लेकिन इस सदन में अच्छे ही लोग हैं, जो अगर इस शब्द का प्रयोग किसी मुख्य मंत्री के मुंह से निकले, तो कोई भी किसी भी दल का व्यक्ति या कोई व्यक्ति इसको जस्टिफाई कर सकता है? कोई इस बात को जस्टिफाई करेगा कि एक मुख्य मंत्री कहे - ठोक देंगे? यह भी कह सकते थे कि एनकाउंटर हो जाएगा, जो बदमाश हैं, उनका एनकाउंटर कर दिया जाएगा, बदमाशों के एनकाउंटर कर दिए जाएंगे। शब्द का जो अर्थ है या जो कहने का तरीका है, उससे भी आदमी के चरित्र का पता चल जाता है। कोई व्यक्ति कहता है कि ठोक देंगे, यह शब्द तो मैंने केवल बदमाशों के मुंह से सुना है, किसी भले आदमी के मुंह से कभी यह शब्द नहीं सुना है। अब जब मुख्य मंत्री कहेंगे कि ठोक देंगे, तो यहां ठोक दिया। एक जिम ट्रेनर लड़का जा रहा था, उसको गोली मार दी, जबकि उसके खिलाफ एक भी क्रिमिनल केस की रपट, एक भी 323 की एनसीआर की रपट कभी नहीं हुई। यह स्थिति है। दूसरी तरफ क्या है? पंजाब के लोग जानते होंगे, हरियाणा के भी जानते होंगे और दिल्ली के भी जानते होंगे, एक बहुत बड़ा अपराधी रविन्द्र काली, जो रोपड़, पंजाब में एक बहुत बड़े अपराधी को पुलिस कस्टडी से छुड़ा कर भागा था, वह चार महीने से फिरोजाबाद जिले में बीजेपी के एक नेता के यहां, जो एमएलए का चुनाव लड़ा था, जो पहले मिनिस्टर रह चुका था, उसके यहां हमारे एक एमएलए की हत्या

करने के लिए रह रहा था। अभी तीन-चार दिन पहले वह पकड़ा गया, तो बिना पंजाब को पूछे, हरियाणा को पूछे, जबकि उस पर पंजाब और हरियाणा से एक-एक लाख रुपए का इनाम था, बिना किसी प्रदेश की पुलिस को सूचना दिए हुए धीरे से बिना किसी पूछताछ के उसको जेल में भेज दिया।

(2बी/एकेजी पर जारी)

AKG-PK/2B/1.05

प्रो. राम गोपाल यादव (क्रमागत) : न उसको पुलिस ने remand पर लिया। अब पंजाब पुलिस remand पर लेगी, तो अलग बात है। जिन पर लाखों रुपए का इनाम है, जो पुलिस को गोली मार कर अपराधियों को छुड़ा कर भागने के दोषी हैं, तमाम अपहरण और लोगों की हत्या करने के दोषी हैं, वे बीजेपी के किसी नेता के घर पर 4-4 महीने रहें, उनकी फोटो है, ऐसा नहीं कि मैं यूँ ही कह रहा हूँ। वह फिरोजाबाद में पकड़ा गया, लेकिन एक गोली नहीं चली, लेकिन सहारनपुर से लेकर बलिया तक 23 लोगों को गोलियाँ मारी गईं। किसी के पैर में मार दी, एक आदमी तो यहाँ मर ही गया और 3 लोग घायल हैं। यह स्थिति है। पूरी तरह से जंगल राज हो गया है। कोई किसी की बात सुनने वाला नहीं है। अधिकारी इतने डरे हुए हैं कि अगर बीजेपी का कोई व्यक्ति कह देता है, any Tom, Dick or Harry, तो उसकी बात सुनी जाएगी, चाहे वह कितनी ही नाजायज़ हो, लेकिन और लोगों की सौ फीसदी जायज़ बात को भी नहीं सुना जा सकता है। उत्तर प्रदेश के हमारे और दूसरे दलों के एमपीज़ यहाँ पर बैठे हैं, they all will support

my statement. मैं कभी झूठा आरोप नहीं लगाता हूँ और बिना तथ्यों के बात नहीं कहता हूँ। ...(समय की घंटी)... लेकिन यह सत्य है, इसलिए मैं मजबूरी में कह रहा हूँ। मुख्यमंत्री जैसे बड़े पद पर बैठे हुए व्यक्ति, उसकी गरिमा को देखते हुए मैं कभी कुछ नहीं कहता हूँ, लेकिन जब मुख्यमंत्री बार-बार इस शब्द को repeat करें, तो मजबूरी में मुझे यह कहना पड़ा। यहाँ से बाहर मैं खुद भी नहीं कहता हूँ, क्योंकि वे आखिर हमारे भी मुख्यमंत्री हैं, लेकिन लोगों को पद की गरिमा का ख्याल रखना चाहिए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Ramgopal*ji*, please conclude.

श्री नरेश अग्रवाल : सर, आप सदन की राय ले लीजिए और प्रोफेसर साहब को बोलने दीजिए। इससे बड़ी राय कोई नहीं है।

प्रो. राम गोपाल यादव : अभी तो मैं उत्तर प्रदेश से बाहर ही नहीं निकल पाया हूँ। ...(व्यवधान)... अभी तो मैं उत्तर प्रदेश से बाहर ही नहीं निकल पाया हूँ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: What to do? Your time is over. What can I do?

SHRI DEREK O'BRIEN: No, no, Sir. Let him speak.

प्रो. राम गोपाल यादव : अब मैं 2-4 मिनट ही और बोलूँगा।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay.

प्रो. राम गोपाल यादव : महोदय, मैं बेरोजगारी के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। अब मैं उत्तर प्रदेश से बाहर निकल आया हूँ, हालाँकि वहाँ भी बेरोजगारी बहुत

ज्यादा है। बेरोजगारी की स्थिति यह है कि इंजीनियरिंग, एमबीए और पीएचडी किए हुए लोग सफाई कर्मचारी के पद के लिए apply कर रहे हैं। जब हमारे डॉक्टर साहब प्रधान मंत्री थे, तब 2013 में सेंट्रल गवर्नमेंट ने Reserved और General Category में 1 लाख 13 हजार नियुक्तियाँ की थीं। आप 2015 में जाइए, तो जो सरकार हर साल 2 करोड़ रोजगार देना चाहती थी, केवल 8 हजार appointments हुई हैं। डा. मनमोहन सिंह जी के जमाने में 2013 में 1 लाख 13 हजार नियुक्तियाँ और 2015 में केवल 8 हजार नियुक्तियाँ इस सरकार के जमाने में! इन्होंने अपने चुनाव घोषणा-पत्र में कहा था कि हम हर साल 2 करोड़ लोगों को रोजगार देंगे। ये रोजगार नहीं दे रहे हैं और सातवें वेतन आयोग में ये सिफारिशें कर दी गईं कि अब Class-III और Class-IV में कोई और नियुक्ति नहीं की जाएगी और जो खाली पद हैं, वे समाप्त किए जाएँगे। मंत्री जी, आपके सब ड्राइवर्स भी contract पर होंगे। अब कोई regular नहीं है। अगर वह आपकी फाइल चुरा कर ले जाए और गाड़ी ले कर चला जाए, तो पता चलेगा कि वह चला गया। गवर्नमेंट का employee पक्का employee होता था, तब उस पर भरोसा रहता था। खास तौर से defence, telecommunication और जो sensitive विभाग हैं, उनके लोगों को सावधान रहना होगा कि जब वे अपनी अटैची में फाइल ले कर अपने घर जाते हैं, तो वे कभी उसको छोड़ें नहीं, क्योंकि ड्राइवर contract पर है, पता नहीं कब गाड़ी सहित चला जाए।

(2सी/एससीएच पर जारी)

SCH-PB/1.10/2C

प्रो. राम गोपाल यादव (क्रमागत) : NPA के लेकर एक बड़ा खतरा और पैदा हो गया है, देश में लोगों के मन में डर पैदा हो गया है कि अगर बैंकों में पैसा रखोगे, तो उसकी सेफ्टी की कोई गारंटी नहीं है, क्योंकि अगर वह बैंक डूबने लगेगा तो वह आपका सारा पैसा ले लेगा। आप लोग इस पर बिल ला रहे थे, लेकिन नहीं लाए।...(व्यवधान)... अगर बैंक पूरा पैसा नहीं लेगा, तो एक लाख छोड़ कर तो सब ले लेगा। यह चीज़ तो अभी भी है। सिन्हा साहब यह जानते हैं, ये वित्त मंत्री रहे हैं। इनके पिता जी बहुत काबिल थे, मैं अभी उनको क्वोट करने जा रहा हूं। वे अब भी हैं और हमारे नेता रहे हैं। जब मैं पहली बार 1992 में राज्य सभा में आया था, he was my leader. 130 नं. कमरे में वे बैठते थे, उनकी नेम प्लेट वहां लगी थी। उन्होंने जीडीपी के बारे में यह कहा था कि इन लोगों ने यह जो नया फॉर्मूला लगाया है, उसकी वजह से जीडीपी 5. 7% था, वरना यह 2% और 3% के बीच में ही रहना चाहिए था, जो डॉक्टर साहब ने भी कहा था। सिन्हा साहब, आपको उनकी बात का खंडन नहीं करना चाहिए था। इन्होंने वह फॉर्मूला चेंज कर दिया।...(समय की घंटी)... मैं एक मिनट और लूंगा। इन्होंने यह कहा था कि हम MSP का डेढ़ गुना देंगे। क्या आपको मालूम है कि इन्होंने क्या * किया है? हम आपके माध्यम से देश के लोगों को यह बताना चाहते हैं कि जो CACP है, उन्होंने

---

*Expunged as ordered by the Chair.

इसका फॉर्मूला बदल दिया है। 2004 से लेकर 2008 मैं Agriculture Committee का चेयरमैन था और 2006-2007 में स्वामीनाथन साहब भी उस कमेटी में आ गए थे। उस वक्त हमने CACP के चेयरमैन को बुलाया और पूछा कि ईमानदारी से बताइए कि आप किस तरह से MSP निकालते हैं? उन्होंने बताया कि यह लोगों को मालूम नहीं चलना चाहिए, उसके बाद उन्होंने सारी बात बताई। आप आश्चर्य करेंगे कि उस वक्त गेहूं और धान की जो कॉस्ट थी, वह उस वक्त की MSP से ज्यादा थी, यानी लागत मूल्य MSP से ज्यादा था। ऐसे में किसान आत्महत्या नहीं करेगा तो क्या करेगा? अब इन्होंने क्या किया है कि जो C-2 है, उसमें irrigation, electricity, pesticides, fertilizers, परिवार के लोगों की लेबर, रेंट इत्यादि सब कुछ माइनस कर दिया है और उसको माइनस करके लागत मूल्य को कम कर दिया और कह दिया कि हमने MSP को डेढ़ गुना कर दिया है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Ram Gopalji, please conclude. ...(Interruptions)... What can I do?

प्रो. राम गोपाल यादव : आप देश के लोगों के साथ यह सब फर्ज़ीवाड़ा कर रहे हैं?

श्री उपसभापति : राम गोपाल जी, आपका टाइम खत्म हो गया है।...(व्यवधान)... मैं क्या कर सकता हूं?

प्रो. राम गोपाल यादव : अभी आपका जो सर्वे आया है, उसके हिसाब से आज भी इस देश के लोगों को 49 प्रतिशत रोज़गार खेती ही देती है। आप उन किसानों को * देने की कोशिश क्यों कर रहे हैं?

श्री उपसभापति : अब समाप्त कर दीजिए।

प्रो. राम गोपाल यादव : मैं एक और बात कह कर अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। राय देने के लिए या ईमानदारी से राय देने के लिए मंत्री लोगों के पास सचिव होते हैं। जब वे सचिव डरते हैं तो सही राय नहीं देते हैं। इसके बारे में गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में लिखा है,

"सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन नीति कर होई बेगिहीं नास ।।"

अगर अपका सचिव सही राय नहीं दे रहा या आप सचिव की राय को सही से नहीं मानते हैं, सही तरीके से लागू नहीं करते हैं, तो शीघ्र ही राज्य का नाश होगा। आप तो मानस की बहुत बात करने वाले लोग हैं, यह बात गोस्वामी तुलसीदास जी बहुत पहले कह गए थे।...(समय की घंटी)... इसलिए मैं यही कहूंगा कि आप ठीक तरीके से जनता के हित में काम कीजिए और लोगों को * देने की बात मत कीजिए। जब बजट के बारे में चर्चा होगी, तो पूरी बात सामने आएगी कि देश को बहुत बड़े पैमाने पर * दिया गया है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(समाप्त)

---

*Expunged as ordered by the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you. Hon. Members, unless you speak within the allotted time, what can the Chair do? The Chair can only request you. The Budget discussion is also there. So, you need not complete all your points in this speech. You can reserve something for the Budget also. So, I request everybody, it is my humble request, to ...

श्री नरेश अग्रवाल : सैशन की डेट एक दिन और बढ़ा दीजिए, सोमवार तक कर दीजिए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now the decision of the House is to have the reply at 3.00 p.m. and therefore accordingly the time is allotted. My humble request is to speak within your time. Now, Shri Derek O'Brien. Your time is 11 minutes.

(Followed by 2d/SKC)

SKC/2D/1.15

SHRI DEREK O'BRIEN (WEST BENGAL): Sir, I stand here to speak on the Motion of Thanks on the President's Address on behalf of my party, the All India Trinamool Congress.

Sir, the hon. President, *Rashtrapatiji*, made two speeches, one in the Central Hall of Parliament and one, on Republic Day, which many

of us may have missed, and, as we know, the speech made in Central Hall is the Government-approved speech.

Sir, I wish to first dwell on two of the points that he raised on Republic Day. This is what the hon. *Rashtrapatiji* said: "Institutions should be disciplined and morally upright and they are always more important than individuals in office." I only wish this was also said in the Central Hall. That would have been a strong message at the right place. The second thing that he said in his Republic Day speech was, "Institutions are more important than individuals." I want to pass this message on from the *Rashtrapati* and all of us in this House to the people concerned here. These are the two important sentences.

Sir, after hearing the BJP President who made the maiden speech here, I thought he was making a maiden speech and he would rise above politics, but he ended up doing another election *maidan* speech. I will restrain myself from doing that, but I hope that after this if anybody from the BJP speaks in this House, they will respond to the five suggestions that I give them to run this country better, on schemes, and to the one or two suggestions that the Trinamool Congress gives them to run this country better overall, beyond the

schemes. No rhetoric, no pakora talk! This is all very well. We all like *pakoras*, but the *pakora* has nobody to defend himself or herself. So, let us leave the *pakora* out.

Sir, I would talk about five schemes. My colleague who spoke before me touched upon a few very important issues; I will not repeat them: simultaneous elections — they can't happen; it is unconstitutional -- on black money, we want a White Paper, institutions and tolerance. So, I would not speak on any of these issues, but I would speak on five points first -- women, health, agriculture, jobs, *Swachch Bharat* and federalism.

First, on women, I would talk pointedly about the scheme *Beti Bachao Beti Padhao*. Here are the numbers. The numbers on *Beti Bachao Beti Padhao* scheme are very interesting. For the scheme, Rs. 280 crores have been allotted this year for the whole country. If you add it up for the last few years, it comes to about Rs. 1,200 crores. Use the example which has worked. Don't do politics. Use the example of *Kanyashree*. For one State, over the last four-and-a-half years, the budget is Rs. 5,000 crores. Number two: How many lives has *Beti Bachao Beti Padhao* touched? There are no numbers. Maybe

it is 50,000 to one lakh. Here is the number for this scheme -- the lives of 45 lakh girls and women have been changed. Their marriage age has gone up and the infant mortality rate has, in fact, dropped. These are the real numbers of the real schemes. Look at the scheme. The United Nations has acknowledged the scheme. Don't do politics by putting one *Beti Bachao Beti Padhao* scheme and giving it Rs. 280 crores. That is the first example, Sir. They didn't learn from this scheme but maybe they can learn from another scheme, the *Rupashree*, which is another scheme which Bengal has just started, without the politics.

Sir, I would make one more quick point on women and then I would move on to health. About 70,000 to one lakh women die every year because of cervical cancer. Why hasn't this Government addressed this issue? I will tell you why. It is because the RSS's economic wing wrote to the Health Ministry — please check the letter — saying that this should not be done. Let us rise above this kind of thinking; put in the signs and let the doctors do their work.

Sir, from women, I am moving on to health. I would just briefly

touch upon the Insurance Scheme. I am giving you the points and I hope, whoever speaks from the BJP would answer these five points.

(CONTD. BY HK/2E)

HK//2E/1.20

SHRI DEREK O'BRIEN (CONTD.): You have announced Rs.2,000 crore for the NHPS. I will give you the benefit of doubt and, I will say, you also add RSBY, which they will probably do, and make it together you will get Rs.4,000 crore. Sir, the annual premium will work out to Rs.1,200 crore. This is a flawed scheme. It hasn't been thought out; it has just been announced. Rather you look at the States like my State or some other States, we offer a premium of Rs.1,200 per family and, worse still, you made the grand announcement and then you say, without discussing with anybody, 40 paise to a rupee has to be paid by the States. These schemes don't work; they are just announcements.

Sir, two quick points on agriculture. It is very nice to go to an election rally in Karnataka and talk about tomato, onion or potato. Sir, it is from the Prime Minister of the country! This is not a college debate. Come to the hard numbers. The BJP Manifesto said in 2014 that they would double farmers' income. The Trinamool Manifesto in 2011 said

that we would double farmers' income. The BJP will make it happen in 2022; the Trinamool made it happen in six years, from 2011 to 2016. I am giving you two numbers. Rupees 94,000 per annum was left with the farmer. Now that number has gone up to Rs.2,20,000 in six years; no promises, without keeping promises.

Now, I come to the President's Address and irrigation. You look at the President's Address and you look at the Budget together and you look at the numbers. Water is a very major issue. Forty-five per cent of the farm land is not irrigated and yet what we do we put Rs.300 crore for irrigation. If you calculate, it will take you 96 years beyond 2022 to reach your target. Sir, if anybody says I am not correct what I am speaking, the Prime Minister is speaking next, I challenge the Prime Minister to challenge my figures.

Sir, come to jobs. On jobs, a lot of people have spoken. I just want to add one more point on jobs. As per the National Career Services Portal launched by the Prime Minister, correct my figure, two in hundred people, who have registered, had got jobs. Only two!

Now, I come to *Swachh Bharat*. My colleague, Shri Manish Gupta, made a very nice point today about the manual scavengers.

Sir, besides the manual scavengers, there is a story in Odisha of Chotu Rautia from Odisha, a 50-year old daily wage worker, a tribal. After he applied for PM's Awaas Yojana, the officials finally turned his *Swachh Bharat* toilet into his home. This is the reality of this programme. I am not speaking big talk here. Even when this entire *Swachh Bharat* was done, yes, which district was number one? You won't have to guess. Yes, it is from Bengal. It is Nadia. Sir, now come to federalism -- operative federalism, cooperative federalism. I have a few points on federalism. Federalism! We made an issue yesterday about a high constitutional authority who is running States because the headquarters are coming and giving the messages. I don't want to dwell more on this; we have spoken enough on this yesterday. Sir, come to federalism. Since we discuss the Railway Budget, we have enough time to discuss the Railway Budget. But in the limited time, I want to make one point about railways because the BJP would give us big talk: No Railway Budget; it is all politicized. I would like to give some numbers -- which I was up, still very late calculating -- about BJP's States in the Railway Budget and that is why there is no Budget Speech. Uttarakhand's increase in budget is 160 per cent; dispute

these numbers. Rajasthan got an increase of 30 per cent; Gujarat got an increase of 20 per cent and Madhya Pradesh 18 per cent. These are plus, plus, plus. Now you contrast that with Delhi, Kerala and West Bengal. They didn't only get plus; they got minus 40, minus 30 and minus 15. What are you talking about federalism?

The first speaker of BJP, Mr. Amit Shah, gave us a lecture on Police modernization. When it is Police and modernization, it is BJP. What was he talking about? I will tell you Police modernization numbers. Someone from the BJP should come back and contradict these numbers that I am giving. In 2014, modernization of Police force got Rs.1,600 crore, then, in 2015, got Rs.1,400 crore. This year it is zero.

(Contd. by DPS/2F)

DPS/VNK/2F/1.25

SHRI DEREK O'BRIEN (CONTD.): I know my friend, Shri Jayant Sinha, who is here, was trying to dispute some of the figures. We also heard the speech. But, there is an old saying about ...पापा कहते हैं...but we will come back to that later. Sir, besides that speech, besides those numbers, ...(Interruptions)... I will take three minutes,

Sir, not more. Sir, BRGF is one. Sir, this Government talks about federalism. They advertise about federalism. Here are two numbers. Thirty-nine major schemes, Centrally-funded schemes have been withdrawn. In 658 important schemes, the State contribution has been increased and that of the Central Government has gone down. And what is the BJP doing herein, in their proposal on the Motion, they are blaming somebody ... 55 साल आपने किया, तो हम लोगों ने किया, 48 परसेंट गुजरात में हम लोग ... These are the poll numbers. Rise above politics. Rise above politics, come to Parliament, make suggestions, whether you are in Opposition or in Government. That's why I have stayed above all politics and only stayed on these numbers. Sir, I always don't like to take more time. I never like to take more time, Sir, but I just have a few more points and then I will summarize. The Prime Minister was in Davos. He said, "Whoever controls data is the most powerful and can shape the world". Remember Aadhaar. This is a dangerous line. Think about it and think about Aadhaar. Sir, I don't want to say anything about false claims because we can write a book now on false claims. The first seaplane ride, the first Ro-Ro ride and so on. I don't want to go there. But I am very interested in the year

2022. Everything will happen in 2022. There is a scientist who predicted that a man will go into Mars by 2022. I believe this scientist. (Time-bell) Sir, two minutes. But, for all the criticisms we, the Opposition, make against this BJP Government, we should also congratulate them once in a way. And, I want to congratulate them because by 2022, the Oxford English Dictionary will have a new word and that word will be defined as 'make a promise', make a lot of hype around the promise, don't deliver the promise and India has given many good words to the Oxford English Dictionary - *hartal, tamasha, khushi,* and so many words... *shampoo* is also one. The new word will come in 2022. We must all work towards it. It is *Jumla*. (Time-bell) Sir, in one minute, I will end. But I see hope in all these and I will tell you where I see the hope. I see hope when I study the character of Mahishasura. Mahishasura was all evil. He was all negative. Completely evil and completely negative.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Your time is over.

SHRI DEREK O'BRIEN: He also felt that no man could ever defeat him. So he kept changing his form and he forgot what he was. Finally, Sir, it took all the good forces to come together in the shape of a

woman to finish Mahishasura, once and forever. Sir, that is my hope in this country. Thank you, Sir.

(Ends)

Mr. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Shri K. K. Ragesh. Your time is four minutes.

SHRI K.K. RAGESH(KERALA): Sir, at the very outset, with due respect to the hon. President, I would like to say that this is the same rhetoric. The President's speech has the same rhetoric that is being repeated by the hon. Prime Minister and his team during the last few years.

(THE VICE-CHAIRMAN, DR. SATYANARAYAN JATIYA, in the Chair)

SHRI K.K. RAGESH: Sir, they are offering a lot many things but they are delivering nothing. They have already offered a garden for you but they are not ready to deliver even a single flower.

(Contd. by KSK/2G)

KSK/NKR/1.30/2G

SHRI K.K. RAGESH (CONTD.): Sir, this Government is about to complete four years in office. It is the right time to review the promises

that they had made, what they could deliver and the promises that they have fulfilled. They could have reviewed that. But, they are still thinking that they are contesting the elections. They are still on the verge, thinking that they are again contesting the elections. That hangover of election is not leaving them.

Sir, as we all know, the UPA Government got defeated because of its policies, its neo-liberal policies that resulted in price hike, agrarian distress, selling out of public sector enterprises, huge corruption, etc. All these issues were the outcome of neo-liberal policies.

Sir, this NDA Government had promised 'good days' for the people. They always used to say, 'सबका साथ, सबका विकास'. But, Sir, has the President's Speech addressed that issue? Have they brought 'good days' for the people? Do they still stand by that slogan of 'सबका साथ, सबका विकास '? Those things are missing in the President's Address. Why? It is true that they have come to power as the single-party majority, but they must remember that they have got only 31 percentage of the total vote share. That means, 69 percentage of the total vote share was in opposition to them. They must understand that point.

Sir, after coming to power, did this Government make any policy change? They have got a lot many *yojanas* with prefix of Prime Minister - PM Yojanas. Hon. LoP mentioned about those schemes. These are nothing but old wine in new bottle. These *yojanas* are nothing more than that. What is the new thing that this NDA Government has delivered? They are talking so much about the Ujjwala Scheme. It is good if they are providing eight crore LPG connections to the poor, but, at the same time, please see the other side of the story. The oil marketing companies were asked to increase the prices of LPG every month, and during the last 17 months, the price of LPG cylinder has already been increased by Rs.77, and all the subsidies are going to be taken back. In such circumstances, how can the poor afford to purchase the LPG cylinder? They should tell us. And, Sir, in 2014, a subsidy of Rs.42,000 crores was provided for LPG. Now, that has been slashed to less than Rs.10,000 crores. The Government is taking Rs.42,000 crores from one pocket and putting Rs.1,200 crores in another pocket and saying that it has provided

Rs.1,200 crores. What does it mean? It is nothing but the * of the people. Please tell us the amount of black money that you have already unearthed. Please tell us the names of the Swiss bank account holders. (Time bell) Why are they not talking about Panama Papers? Why are they not talking about the names that have appeared in Panama Papers and Paradise Papers? It is because their own people's names appear in those papers. So, they are not talking about that.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Please conclude. Your time is over.

SHRI K.K. RAGESH: Sir, I will take only three more minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Please conclude. Please, say your last sentence.

SHRI K.K. RAGESH: Sir, they said that after demonetization, they would find Rs.4 lakh crore of black money. But, 99 per cent of the total demonetized currency has come back. What does it mean? They allowed the black-money holders to convert the black money into

---

***Expunged as ordered by the Chair.**

white. This is what happened. (Time bell) Again, Sir, who is responsible for the misery that was caused to the common man? Who is responsible for the utter destruction of the MSME sector, which has collapsed? Sir, they are answerable for that.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Thank you.

SHRI K.K. RAGESH: They always talk about promoting digital transactions. Then, why are they levying user charges on digital transactions, which are cheaper than printing currency? They are allowing certain companies, like *Paytm*, to make super profits through these transactions. That is why, they are asking the people to deposit their money in the banks.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Nothing more will go on record. Please conclude.

SHRI K.K. RAGESH: Sir, please.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Okay, just the last sentence; only one minute.

(Followed by 2H – GSP)

GSP-DS/1.35/2H

SHRI K.K. RAGESH: Again, you are talking about agriculture as the engine of growth; as the largest employer, and, you are talking about giving priority to that sector but what is happening now? You said that you were going to double the income of the farmers, but, Sir, unfortunately, the income has not doubled but the number of suicides has doubled. The farmers' suicide has increased by 47 per cent. Who is responsible for that?

Now, you are coming up with a gimmick of fifty per cent profit over and above the cost of production as MSP.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): You have exceeded your time. ...(Interruptions)...

SHRI K.K. RAGESH: Sir, what is the budgetary allocation that you have provided? ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Please. ...(Interruptions)... Now, Shri Satish Chandra Misra. ...(Interruptions)... Please, please, please. ...(Interruptions)... You have taken more than two minutes. ...(Interruptions)... Please. ...(Interruptions)... You have concluded it. Very good. आप बैठ जाइए।

SHRI K.K. RAGESH: Sir, they are talking about employment generation. ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Please allow him to speak. ...(Interruptions)... Nothing will go on record. ...(Interruptions)... Now, Satish ji. ...(Interruptions)...

SHRI K.K. RAGESH: What are you providing to the professional graduates? ...(Interruptions)... Peanut selling! ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Okay. Now, Satish ji. ...(Interruptions)... Mike please.

SHRI K.K. RAGESH: * (Ends)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Nothing is going on record. ...(Interruptions)... Nothing is going on record. ...(Interruptions)... Nothing is going on record. ...(Interruptions)... Please sit down. Thank you.

(Ends)

*** Not recorded.**

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने Presidential Address पर लाए गए Motion OF Thanks पर मुझे बोलने का मौका दिया। मान्यवर, मैं माननीय प्रेजिडेंट साहब की स्पीच को देख रहा था। उसको कई बार पढ़ने के बाद, उसकी शुरुआत में यह देखने को मिला कि कांस्टिट्यूशन के जो आर्किटेक्ट थे, जो कांस्टिट्यूशन को बनाने वाले थे- बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर, उनका जिक्र किया गया।

उनका नाम लेने के बाद यह भी कहा गया कि democracy cannot survive without social and economic democracy. लेकिन आज क्या इस देश में सोशल डेमोक्रेसी बची है? खास तौर से, जब से यह सरकार आई है, तो सोशल डेमोक्रेसी कहाँ गई? इस पूरे भाषण में, जो कि सरकार का डॉक्युमेंट होता है, उसमें माननीय राष्ट्रपति महोदय ने एक बार भी इस बात का जिक्र नहीं किया कि दलितों के लिए और अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए वे क्या करने जा रहे हैं या सरकार क्या कर रही है या क्या सोच रही है। पूरे डॉक्युमेंट में कहीं पर भी उसका जिक्र नहीं है। इस पूरे डॉक्युमेंट को कई बार पढ़ने के लिए यही मिला कि उन्होंने शायद यह नाम भी लेना उचित नहीं समझा, जबकि वे खुद भी उसी कास्ट से आते हैं। माननीय प्रेजिडेंट साहब की मजबूरी है, हम समझते हैं। कैबिनेट ने जो बनाकर दे दिया, उस पर उनको दस्तखत करना है और उसको ही बोलना भी है। इसलिए यह डॉक्युमेंट सरकार की जो मंशा है, दलितों के बारे में जो सोच है, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बारे

में जो सोच है, वही चीज़ इसमें परिलक्षित होकर उनकी स्पीच में भी आई। इसीलिए हम लोगों का यह मानना है कि भारतीय जनता पार्टी ने यह सोचा कि अगर इस देश में हम एक दलित व्यक्ति को प्रेजिडेंट बना देते हैं, तो दलितों के उद्धार के लिए शायद इतना ही काफी है। इससे नहीं होने वाला है। जब तक आप उनके बारे में अपनी योजनाएँ नहीं लाएँगे, उनके साथ जो अत्याचार कर रहे हैं, उनके साथ जो दुराचार कर रहे हैं, उसको बन्द नहीं करेंगे, तब तक उनका उद्धार होने वाला नहीं है। वह तभी हो सकता है। इसीलिए भारतीय जनता पार्टी कभी भी यह नहीं चाहेगी कि इस देश का प्रधान मंत्री कोई दलित हो, क्योंकि सत्ता की चाबी प्रधान मंत्री के पास होती है। वे केवल प्रेजिडेंट बनाकर दलितों में सिर्फ यह एक संदेश देना चाहते थे कि देखिए, हमने एक दलित को प्रेजिडेंट बना दिया। आज चाहे आप उत्तर प्रदेश में देख लीजिए या देश में देख लीजिए, अगर सबसे ज्यादा उत्पीड़न किसी का हो रहा है, तो इन्हीं लोगों का हो रहा है।

इतना ही नहीं, आज पूरे देश में unemployment फैला हुआ है। इस पर सभी लोगों ने अपनी बातें कहीं, आँकड़े भी दिए, सब कुछ दिया। हम उन आँकड़ों पर जाना नहीं चाहेंगे, क्योंकि समय कम है। सालाना दो करोड़ लोगों को employment देने की बात कही गई थी, लेकिन हुआ क्या, निकला क्या है? जिन लोगों को already employment मिलता था, जिनके लिए रोज़गार का कोई ज़रिया था, वह भी खत्म कर दिया गया।

(2जे/एमसीएम पर जारी)

MCM-SK/2J/1.40

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा (क्रमागत) : पोस्टें खत्म की जा रही हैं। जहां कहते हैं कि 5 साल से ज्यादा पोस्टें खाली हैं तो उनको हम खत्म कर देंगे। क्यों खाली हैं? आप सरकार में हैं, आप सत्ता में हैं, आपको उन पोस्टों को भरना था, आपने क्यों नहीं भरा? अगर आप नहीं भरते हैं और कहते हैं कि अब ये पोस्टें 5 साल नहीं भरी गई हैं, इसलिए हम इनको खत्म कर देंगे। इसके पीछे मंशा क्या है? जितने भी पी0एस0यू़ज़0 हैं, जितने भी पब्लिक सैक्टर आर्गनाइजेशंस हैं, जो सरकारी संस्थाएं हैं, उनको धीरे-धीरे आपने प्राइवेटाइजेशन की तरफ कर दिया और प्राइवेटाइजेशन इसलिए कर दिया, क्योंकि आप जानते हैं प्राइवेटाइजेशन कर देंगे। बड़े-बड़े उद्योगपति जिनके लिए सरकार चलती है, कुछ चुनिंदा, उन्हीं के लिए सरकार चलती है। गरीबों के लिए और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए सरकार नहीं चल रही है। उसको प्राइवेटाइजेशन इसलिए आपने किया क्योंकि उसमें रिजर्वेशन खत्म हो जाएगा। रिजर्वेशन एक ऐसा इश्यू है, जिसके तहत जो दलित समाज के लोग, बैकवर्ड समाज के लोग, अनुसूचित जाति, जनजाति के लोग जो थे, वे एक एम्प्लॉयमेंट पाते थे। उस एम्प्लॉयमेंट को आपने कई तरह से खत्म करने की कोशिश की। आपने प्राइवेटाइजेशन करके ठेकेदारों को दे दिया। ठेकेदारों के ऊपर कोई गारंटी नहीं, कोई कंडीशन नहीं है कि वे इनको एम्प्लॉय करेंगे और इनको रिजर्वेशन देंगे। जो ठेकेदार होता है, वह अपनी मरजी से appointment देता है। उसका नतीजा क्या हुआ कि धीरे-धीरे रिजर्वेशन खत्म

हो रहा है और जहां पर सरकारी पोस्टें थीं, उनको आपने भरना बंद कर दिया। लाखों-लाखों की संख्या में पूरे देश में बैकलॉग है। जब उत्तर प्रदेश में सुश्री बहन मायावती जी की सरकार थी, जब वे मुख्य मंत्री थीं, तो उन्होंने जो पिछले कई वर्षों से बैकलॉग था, कई लाखों की संख्या में था, उन्होंने भरने का काम किया था। वह कांस्टीट्यूशन में भी प्रोवाइडेड है, उसमें है कि कोई भी बैकलॉग आप नहीं रखेंगे, लेकिन बैकलॉग भरने की जगह आप पोस्टें खत्म करने का काम कर रहे हैं। यह इस सरकार की मंशा है। इतना ही नहीं, एक तरफ आप कहते हैं कि हम एम्प्लॉयमेंट दे तो रहे हैं, पकौड़ा बेचना या अगर कोई चाट बेचता है तो कोई वैसी चीज नहीं है कि ठीक है, पकौड़े वाले की अपनी प्राइवेसी होती है, वह खराब चीज नहीं, लेकिन जब आप उसकी तुलना करने लगते हैं, जब आपको यह कहा जाता है कि आप इस कन्ट्री के यूथ को एम्प्लॉयमेंट क्यों नहीं दे रहे हैं, जो करोड़ों की संख्या में अनएम्प्लॉइड है, पढ़ाई करके पोस्ट ग्रेजुएट होकर और एक्सपर्टीज़ लेकर अपनी फील्ड में बैठा हुआ है, आप उस कम्प्यूटर ऑपरेटर से कहते हैं कि पकौड़ा बेचिए। आज तो जयंत सिन्हा जी ने कह दिया कि चाट बेचिए, गोलगप्पे बेचिए। तो फिर इस यूथ को गोलगप्पे और चाट और पकौड़ा बेचने की एजुकेशन दीजिए। उसको फिर आप क्यों पढ़ा रहे हैं, आप क्यों पढ़ाई की बात करते हैं और आप इसके साथ-साथ यह भी तो सोचिए कि आज आप देश को कहां ले जा रहे हैं। इस देश में जो पढ़ा-लिखा व्यक्ति है, उसको आप फोर्स कर रहे हैं कि आपको हम appointment नहीं दे सकते हैं तो आप पकौड़ा बेचिए। उसकी एजुकेशन

खत्म कर दीजिए। तो आप उसकी एजुकेशन में उसको पकौड़ा बनाना सिखाइए और चाट बनाना सिखाइए, बताशे बनाना सिखाइए, क्योंकि आपकी जो मंशा है कि हम इनको इस तरीके से एम्प्लॉयमेंट देंगे, तो आप इनको क्यों आई0आई0टी0 में पढ़ा रहे हैं, क्यों एन0आई0टी0 में पढ़ा रहे हैं, क्यों आई0आई0एम0 में पढ़ा रहे हैं? आई0आई0एम0 पढ़ने के बाद अगर उसको यही काम करना है तो यही काम शुरू से कहिए कि अपने-अपने बच्चों को अब आप इन स्कूलों में मत भेजिए। मैं पूछता हूं, क्या जयंत सिन्हा साहब अपने बच्चे को भेजेंगे या अपने ग्रैंडसन को या इनके जो भाई-भतीजे होंगे, उनको पकौड़े बनाने की दुकान पर भेजेंगे? वे तो कहेंगे कि नहीं, आप जाइए, विदेश में जाकर पढ़कर आइए और अच्छा काम करिए। तो इसलिए अगर हम एम्प्लॉयमेंट नहीं दे पा रहे हैं, तो इस चीज को स्वीकारना चाहिए और यह कहना चाहिए कि हां, हमने इस देश के नौजवान लोगों को * दिया, उनको असत्य बोला, उनको बरगलाया, उनसे वोट असत्य बोलकर के लिया। आपने उनको बरगलाने का काम किया और कहा कि आप हमको वोट दे दो और हम आपको एम्प्लॉयमेंट दे देंगे। तो इस बात को आपको स्वीकारने में क्या दिक्कत है, इसको स्वीकार लीजिए, लेकिन यह मत कहिए कि जो बाहर पकौड़ा बेच रहा है, यह एम्प्लॉयमेंट है। अगर आप इसी को एम्प्लॉयमेंट मानते हैं तो आप महिलाओं के बारे में सोचिए, आप लड़कियों के बारे में सोचिए।

***Expunged as ordered by the Chair.**

वे क्या करेंगी? आप कह रहे हैं कि एम्प्लॉयमेंट तो इस चीज से मिल रहा है। आज इस देश की जो लड़कियां हैं, वे लड़कों से ज्यादा अच्छे नम्बर ला रही हैं, अच्छा पढ़ रही हैं, अच्छा आगे बढ़ रही हैं। आप कह रहे हैं कि "बेटी पढ़ाओ", तो बेटी पढ़ाकर के आप उसको कहां ले जाएंगे, किस दुकान पर बिठाएंगे और क्या कहेंगे कि पकौड़े की दुकान पर बैठो?

(2K/SC पर जारी)

SC-YSR/1.45/2K

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा (क्रमागत) : या आप इसको बताशे की दुकान में बैठाएंगे, जैसाकि आज सिन्हा साहब ने कहा। एक मंत्री जी ने कहा था कि ड्राइवर बन रहे हैं, बीस हज़ार गाड़ियां चल रही हैं, टैक्सियां चल रही हैं, उनमें भी तो employed हो गए हैं। सर, जो प्राइवेट टैक्सियां चल रही हैं, यहीं पर आप इस देश को ले आना चाहते हैं! जहां एक ओर बाहर के लोग चांद-सितारों और सूरज तक जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर हम इसको कहां ले जा रहे हैं - हम इसे पुरातत्व की ओर ले जा रहे हैं। जब इस country और बाहर की countries के बीच comparison होगा तो यहां के नौजवानों का और वहां के नौजवानों का भविष्य देखने को मिलेगा।

उपसभाध्यक्ष (डा0 सत्यनारायण जटिया) : मिश्रा जी, आपके पास पांच मिनट हैं।

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा : आज देश में जो women हैं, उनके बारे में कहा गया कि देखिए, हमने मुस्लिम महिलाओं के लिए तीन तलाक की बात करके उनके हक

की बात की है। आप women की बात करने के हकदार हैं ही नहीं, उनके benefits की बात करने के हकदार हैं ही नहीं। आप तो वे लोग हैं, जिन्होंने जब यहां पर Women's Reservation Bill आया था तो उसको रोकने का काम किया था। जिस तरीके से आपने Reservation in Promotion को रोकने का काम किया, आपने Constitutional Amendment को किया, जिसे आप आज तक लोक सभा में नहीं लाए हैं, उसी तरीके से आपने Women's Reservation Bill को भी रोकने का काम किया और आप कहते हैं कि हम उनके बड़े ही खुदाई-खिदमतगार हैं! इस प्रकार इनका चेहरा अलग है, बोलने की चीज़ अलग है। सर, इसमें जन-धन योजना की बात कही गयी है। उधर से यह बात कही गयी कि इस देश के 32 करोड़ लोगों ने, गरीबों ने अपने अकाउंट खोले, जिन्होंने कभी अकाउंट देखे नहीं थे और 32 करोड़ लोगों ने जो अकाउंट खोले, उसमें 72 हज़ार करोड़ रुपए जमा हो गए हैं। आप यह भी तो देखिए कि ये 32 करोड़ लोग वे लोग हैं, जिन्हें आपने कहा था कि हम 15 से 20 लाख रुपए आपके खाते में जमा करा देंगे, इसलिए लाइन लगाकर उन्होंने खाते खुलवाए और आज उनके खाते में सिर्फ दो रुपए रह गए हैं। तभी तो 32 करोड़ के 72 हज़ार करोड़ हुए। इस प्रकार दो रुपए अगर उसके खाते में हैं तो इसे आप अपनी बड़ी भारी उपलब्धता बता रहे हैं! आप कह रहे हैं कि हमने बड़ा अच्छा काम कर दिया, बहुत बड़ा काम कर दिया! आपके बैंक वालों ने खुद कहा, आपके स्टेट बैंक की जो तत्कालीन चेयरमैन थीं, उन्होंने खुद मीडिया में स्टेटमेंट में कहा कि हम तो इनके रुपए

काट रहे हैं। जिसके खाते में हज़ार रुपए से कम हैं, उसके खाते से हर महीने हम रुपए काट लेते हैं क्योंकि वे हमारे बैंक का इस्तेमाल कर रहे हैं। तो आप तो उनसे रुपए छीनने का काम कर रहे हैं।

आज इस देश में किसानों की जो हालत है, वह बद से बदतर है। आज आपने उत्तर प्रदेश में देखा, हम सबने देखा, पूरे देश ने देखा कि उत्तर प्रदेश ही नहीं, महाराष्ट्र या कहीं भी ले लीजिए, चाहे वह आलू हो, चाहे टमाटर हो, चाहे प्याज़ हो, उसे उन्हें सड़कों पर फेंकना पड़ा है। उन्हें मुख्य मंत्री जी के घर के सामने यह दिखाने के लिए अपना आलू फेंकना पड़ा कि हमारी हालत क्या है और हमें इस आलू की क्या value मिल रही है। Cold storage में जो किराया था, वह ज्यादा था और आलू की कीमत उससे बहुत कम थी कि वे उसका किराया भी नहीं दे सकते थे इसलिए उन्होंने कहा कि इसे cold storage में ही छोड़ दो और cold storage वालों ने उसे सड़कों पर फेंका, किसानों ने फेंका - आज उनकी ऐसी हालत हो गयी है। आज उत्तर प्रदेश में क्या हाल चल रहा है? वहां पर सिर्फ एक ही काम चल रहा है कि मारो, ठोको। जैसा कि उन्होंने कहा कि आप encounter कर दो। आज महिलाओं का उत्पीड़न हो रहा है, दलितों का उत्पीड़न हो रहा है, किसानों का उत्पीड़न हो रहा है। अगर कोई प्रदर्शन करता है, तो उसको मारने की धमकी दी जाती है, ठोकने की धमकी दी जाती है। इतना ही नहीं, वहां सिर्फ "डंडा और झंडा" के बल पर सब कुछ चल रहा है और कुछ नहीं चल रहा है। उत्तर प्रदेश में इस समय डंडे और झंडे के बल पर आपस में समुदायों

को लड़ाकर, अल्पसंख्यकों के खिलाफ कार्यवाही करने, दलितों के खिलाफ कार्यवाही करने, उत्पीड़न करने के अलावा और कुछ नहीं हो रहा है। इसीलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि इन्हें इस बात का घमंड नहीं होना चाहिए कि हम आज सरकार में बैठे हैं। अब आपके चार साल हो गए हैं। कल सत्ता पक्ष की तरफ से कहा गया कि हमारा यह आखिरी बजट है। सही बात है। आपने बहुत सही कहा। कभी-कभी सही निकल आता है, ज़ुबां पर सरस्वती बैठ जाती है। यह वाकई आपका आखिरी बजट है, आपको अगला बजट पेश करने का मौका नहीं मिलेगा, इस देश की जनता आपको अगला बजट पेश करने का मौका नहीं देने वाली है क्योंकि आपने हर वर्ग के लोगों को बरबाद करने का काम किया है। Real Estate, जहां पर लोग काम करते थे, मज़दूर काम करते थे, उसकी बुरी हालत हो गयी है। इस देश के मज़दूर, किसान, टीचर्स सब परेशान हैं क्योंकि सब jobless हो गए हैं, सब घरों में बैठ गए हैं, उनको कोई काम नहीं मिल रहा है। आज उन्हें मजबूर होकर सड़कों पर आंदोलित होकर या तो आपके डंडे खाने पड़ते हैं या मजबूरी में आत्महत्या करनी पड़ती है। इस देश में आज यह सब हो रहा है। इसीलिए मैं कहना चाहता हूं कि अब यह पूरा देश, इस देश के सभी लोग, इस देश के 85 प्रतिशत लोग - Scheduled Castes, Scheduled Tribes, Minorities, खास तौर से मुस्लिम और Backward Class के लोग आज आपका असली चेहरा देख चुके हैं, उसको पहचान चुके हैं और पहचानने के बाद उन्होंने यह मन बना लिया है, उसका अंदेशा आपको हो भी गया है कि अब ये इकट्ठा

होकर आपको आपकी इस गद्दी से बाहर करके इस बजट को बनाने और दुबारा भाषण बनाने की परेशानी से हमेशा-हमेशा के लिए दूर करने वाले हैं। इसी के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं, धन्यवाद।

(समाप्त)

(2एल-पीआरबी पर आगे)

PRB-VKK/2L/1.50

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, I seek your protection. ...(Interruptions)... Sir, I seek your protection. ...(Interruptions)... Sir, please protect me. ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Under which rule?

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, I will tell you. ...(Interruptions)... It is a very serious issue. ...(Interruptions)... I spoke today in Rajya Sabha. The first four to six minutes of my speech were blacked out. It was not shown on Rajya Sabha TV. ...(Interruptions)... There is no rule. ...(Interruptions)... It was not shown on Rajya Sabha TV. ...(Interruptions).... It is the first five minutes of my speech. ...(Interruptions)... I am a Member of the Opposition.

...(Interruptions)... यह कैसे हुआ? सर, इसके बारे में पता कीजिए। Sir, please protect me. ...(Interruptions)...

उपसभाध्यक्ष (डा. सत्यनारायण जटिया) : जरूर इसके बारे में पता करेंगे। Please sit down.

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, the first five minutes of my speech were not shown on Rajya Sabha TV. ...(Interruptions).... No, no, Sir. ...(Interruptions)... The TV started after six minutes. ...(Interruptions)... Sir, we are getting wi-fi. ...(Interruptions)... Sir, please! ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): So, we will enquire about it and let you know what had happened. ...(Interruptions)...

SHRI DEREK O'BRIEN: No, Sir. ...(Interruptions)... Not just let me know...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Please sit down. ...(Interruptions)...

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, give me a chance. ...(Interruptions)..

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा: सर, यह तो ब्लैक आउट है। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Without asking for enquiry, how can we? ...(Interruptions)... देरेक जी, इसका यहां से तो पता नहीं लगाया जा सकता है। यहां से तो पता नहीं लगा सकते।

नेता विरोधी दल (श्री गुलाम नबी आज़ाद) : उपसभाध्यक्ष महोदय, यह बहुत serious issue है कि राज्य सभा का टेलिविजन, लाइव टेलिकास्ट हो या उसकी न्यूज़ में प्रोसीडिंग्ज़ हों, उसमें सभी पार्टीज़ को equally time मिलना चाहिए। आज इसका लाइव टेलिकास्ट नहीं किया। परसों जब यहां बहस हो रही थी, मैं भी उसमें बोला। रात की आठ बजे की न्यूज़ मैंने देखी, उसमें 98 परसेंट न्यूज़ पूरे सदन की बीजेपी के अध्यक्ष को थी और आठ सेकंड मुझे और आठ सेकंड दूसरे विपक्ष के सदस्यों को थीं, टोटल 16 सेकंड थे पूरे विपक्ष को और रूलिंग पार्टी के बीजेपी प्रेजिडेंट को 99.5 परसेंट था। राज्य सभा के टेलिविजन को बीजेपी के टेलिविजन में कन्वर्ट मत करो। यह राज्य सभा का टेलिविजन है।

قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد) : اپ سبھا ادھیکش مہودے، یہ بہت سیریس ایشو ہے کہ راجیہ سبھا کا ٹیلی ویژن، لائیو ٹیلی کاسٹ ہو یا اس کی نیوز میں پروسیڈنگ ہوں، اس میں سبھی پارٹیز کو ایکولی ٹائم ملنا چاہئے۔ آج اس کا لائیو ٹیلی کاسٹ نہیں کیا۔ پرسوں جب یہاں بحث ہو رہی تھی، میں بھی اس میں بولا۔ رات کے آٹھ بجے کی نیوز میں نے دیکھی، اس میں 98 فیصد نیوز پورے سدن کی بی۔جے۔پی۔ کے ادھیکش کی تھی اور آٹھ سیکنڈ مجھے اور آٹھ سیکنڈ دوسرے وپکش کے سدسیوں کو تھیں، ٹوٹل 16 سیکنڈ تھے پورے وپکش کو اور

رولنگ پارٹی کے بی-جے-پی- پرینڈینٹ کو 99.5 فیصد تھا- راجیہ سبھا کو ٹیلی وژن کو بی-جے-پی- کے ٹیلی وژن میں کنورٹ مت کرو- یہ راجیہ سبھا کا ٹیلی وژن ہے-

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, please assure me after the LoP has spoken. How come these five minutes...(Interruptions)... इसकी इन्क्वायरी होनी चाहिए।

श्री गुलाम नबी आज़ाद : सर, इसकी इन्क्वायरी होनी चाहिए। ...(व्यवधान)... इसकी इन्क्वायरी होनी चाहिए। ...(व्यवधान)... हमें परसों वाली भी इन्क्वायरी चाहिए। ...(व्यवधान)... यह इन्क्वायरी ऑल पार्टीज़ कमेटी के रिप्रेजेंटेटिव्ज के द्वारा होनी चाहिए। ...(व्यवधान)...

جناب غلام نبی آزاد : سر، اس کی انکوائری ہونی چاہئے ---(مداخلت)--- اس کی انکوائری ہونی چاہئے ---(مداخلت)--- ہمیں پرسوں والی بھی انکوائری چاہئے ---(مداخلت)--- یہ انکوائری آل پارٹیز کمیٹی کے ری-پریزینٹیٹو کے ذریعے ہونی چاہئے ---(مداخلت)---

उपसभाध्यक्ष (डा. सत्यनारायण जटिया): ठीक है। ...(व्यवधान)... जब तक हम चेयरमैन साहब से बात नहीं करेंगे, तब तक इसका हल यहां पर नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आज़ाद : दूसरा, मीडिया को आपने अपनी पार्टी का मीडिया बनाया, लेकिन लोक सभा और राज्य सभा के चैनल को अपनी पार्टी का मीडिया मत बनाइए। ...(व्यवधान)...

قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد) : دوسرا، مڈل کو آپ نے اپنی پارٹی کا مڈل بنایا، لیکن لوک سبھا اور راجیہ سبھا کے چنل کو اپنی پارٹی کا مڈل مت بنائیے ---(مداخلت)---

उपसभाध्यक्ष (डा. सत्यनारायण जटिया): हो गया। ...(व्यवधान)... श्री के.टी.एस. तुलसी। अच्छा, तुलसी जी नहीं है, श्री डी. राजा। यदि कोई बात है, तो राज्य सभा में हम जिस बात की चर्चा कर रहे हैं, इन सारी बातों के बारे में सभापति जी से चर्चा करके निदान किया जा सकता है। आप लोग जानते हैं। हम सब सीनियर लोग हैं। काफी लम्बे समय से हम लोग यहां पर हैं। इसके बारे में चैम्बर में बात की जा सकती है, उसको यहां करने से कोई लाभ नहीं है। ...(व्यवधान)... श्री डी. राजा । आपका अब बोलने का समय शुरू होता है। आपके पास आठ मिनट का टाइम है। आप अच्छी तरह से बोलिए।

SHRI D. RAJA (TAMIL NADU): Sir, with great agony, I rise to speak on this Motion. Sir, the Address of the President begins with the paragraph, I quote, "The architect of our Constitution, Baba Saheb Dr. Bhim Rao Ambedkar, used to say that political democracy cannot survive without social and economic democracy.

-VKK/BHS-GS/2M/1.55

SHRI D. RAJA (CONTD.): Guided by this fundamental spirit of the Constitution and committed to the welfare of weaker sections, my Government is working towards strengthening social justice and economic democracy and to usher ease of living for the common man."

Sir, the sad part is that this Government has been working against political democracy in our country. You may say that Shri Jawaharlal Nehru has not contributed anything for democracy in this country. Now, we have listened what Mr. Derek O'Brien has been saying. What is the democracy that we practice? We should think over that. The sad part is that – with all seriousness, I make this statement, this Government has been working against the political democracy. It has already deepened the social and economic inequalities. Political democracy enshrined in the Constitution and the statutes are shrinking day by day, and with all responsibility I am saying, shrinking day by day due to Government's policy of divide and misrule. Emergence of a surveillance State is threatening the rights of

people. This is very dangerous. I appeal to all political parties to think over it.

Sir, quoting Dr. Ambedkar and acting contrary to his vision has been practice of this Government, the present Government. The Government quotes Dr. Ambedkar and at the same time quotes Shri Deen Dayal Upadhyay who opposed the Constitution because it did not allow creating a *Hindu Rashtra*. Sir, it sounds offensive to the very vision of Constitution and the legacy of Dr. Ambedkar. Seventy years after Independence, we cannot afford to invoke those who opposed the very Constitution of the country.

Sir, today, the nation is passing through a very critical period. Ever since we won the Independence, I think, this is the first time the country is passing through such a critical period. There is a crisis, all pervasive crisis. There is a crisis in economic life, there is a crisis in political, social and cultural life. There is crisis in all the organs of State. There is crisis in Judiciary, there is crisis in governance and the Parliament is also facing grave threat. Parliament is there and Parliament's powers are being curtailed. The Government has weakened the Parliament by not referring Bills to the Department-

related Parliamentary Standing Committees. Even the Money Bill route is being increasingly taken to negate discussion in the very same House — Rajya Sabha. The entire Opposition wanted the triple talaq Bill to be referred to the Select Committee. What is wrong in that? As though the Opposition does not want Triple Talaq. You are making that issue as a big issue. The Opposition wants a legislation but a legislation of this kind will have far-reaching implications on our social life, on our women, their empowerment irrespective of the religions which they belong to. That is why the Parliament should have a closer scrutiny, legislative scrutiny of the legislation. This is what we said. Parliament is undermined by not referring Bills to the Standing Committees. This President, Sir, has given the first Address. But earlier we had one President, Mr. K.R. Narayanan; he had also served as Vice-President and Chairman. Mr. Narayanan emphasized the need for having the Committee system in order to strengthen the parliamentary democracy. The present Prime Minister goes on saying 'Maximum governance, minimum Government.' Now, what is happening in reality? It is 'Maximum Government, minimum Parliament.' That is what is happening. Sir, this is what I would like to

appeal to all the parties to think over. The situation is very challenging. It is not good for the country and its future. (Contd. by RL/2N)